नव भारत
| संस्थापक : स्व. रामगोपाल माहेश्वरी | प्रेरणा स्त्रोत : स्व. प्रफुल्ल माहेश्वरी |

पर्यावरण : युवाओं में बढ़ती जागरूकता सराहनीय

आज का विश्व गहराते जलवायु परिवर्तन और बढ़ते प्रदूषण की मार से जूझ रहा है. प्रकृति के संसाधनों का अनुचित दोहन हमारी पृथ्वी को संकट में डाल रहा है. ऐसे समय में जब संकट हमारे दरवाजे पर दस्तक दे रहा है, तो नई पीढ़ी,विशेषकर जेन-जी और मिलेनियल्स (क्रमश:18 से 25 वर्ष और 25 से 35 वर्ष तक के युवा)ने एक नई जागरूकता और जिम्मेदारी की ओर कदम बढ़ाया है. यह युवा पीढ़ी न केवल पर्यावरण की चिंता कर रही है, बल्कि हर रोज़ अपने व्यवहार में उसे प्राथमिकता दे रही है. डेलॉइट ग्लोबल के 2025 के सर्वेक्षण ने यह साबित कर दिया है कि ये युवा जमीन से जुड़ी, हौसले से भरी और परिवर्तन के लिए प्रतिबद्ध हैं.

पर्यावरण संरक्षण उनकी भावनात्मक चिंता मात्र नहीं है, बल्कि यह उनका जीवन मूल्य बन चुका है.एक तथ्य यह भी सामने आया है कि करीब 65 फीसद जेन-जी और 63 फीसद मिलेनियल्स पर्यावरण समस्याओं को गंभीरता से देखते हैं. वे जलवायु परिवर्तन के खतरों को साफ समझते हैं और खुद को समाधान का हिस्सा मानते हैं. शायद इसलिए ही उनकी बड़ी संख्या नौकरी चुनते वक्त कंपनी की पर्यावरण नीति को जांचती है. यह संकेत है कि अब कॉर्पोरेट जगत भी पर्यावरण संरक्षण को अपनी नैतिक जिम्मेदारी समझ रहा है और इसे व्यापार में सफलता की कुंजी मान रहा है.

यह जागरूकता केवल कार्यक्षेत्र या नौकरी तक सीमित नहीं है. उपभोग की आदतों में भी इन युवाओं ने बड़ा बदलाव लाया है. वे इलेक्ट्रिक या हाइब्रिड वाहनों को अपनाना चाहते हैं, सौर ऊर्जा की ओर बढ़ रहे हैं और टिकाऊ उत्पादों के लिए अधिक निवेश करने को तत्पर हैं. उनकी यह सोच बताती है कि उनका पर्यावरण संरक्षण कोई दूर की बात नहीं, बल्कि वर्तमान जीवन की जरूरत है. 43 प्रतिशत जेन-जी और 47 प्रतिशत मिलेनियल ऊर्जा की बचत और पानी संरक्षण में अपनी भूमिका निभा रहे हैं, जो आश्चर्यजनक है. पर्यावरण के प्रति यह समर्पण नए सामाजिक अनुबंध की शुरुआत है, जो विकास और संरक्षण को विरोधी विचार नहीं, बल्कि परस्पर पूरक मानता है. आज के युवा जानते हैं कि तकनीकी प्रगति और पर्यावरण संरक्षण दोनों साथ-साथ चल सकते हैं. इसी समझ से वे हरित ऊर्जा में निवेश को सफल और रोजगार का नया रास्ता मानते हैं. यह सोच न केवल पृथ्वी को सुरक्षित बनाएगी, बल्कि आर्थिक और सामाजिक प्रगति को भी गति देगी. दरअसल, कार्बन उत्सर्जन कम करना, टिकाऊ कार्यस्थल बनाना, और प्रभावी कदम उठाना अब आवश्यक हो गए हैं.

यह बदलाव किसी बाहरी आंदोलन से नहीं, बल्कि युवाओं की आंतरिक नैतिक प्रेरणा से आ रहा है. वे पर्यावरण को केवल एक विषय के रूप में नहीं देख रहे, बल्कि वह उनके मूल्य प्रणाली का अभिन्न हिस्सा है. इस नई सोच में पूरी दुनिया के लिए एक संदेश छुपा है कि पृथ्वी को बचाने की सबसे बड़ी आशा अब अंतरराष्ट्रीय संधियों या सरकारी नीतियों में नहीं, बल्कि युवा वर्ग की जागरूकता और प्रतिबद्धता में है. जेन-जी और मिलेनियल पीढ़ी ने साफ कर दिया है कि पर्यावरण संरक्षण सिर्फ एक विकल्प नहीं, जीवन की अनिवार्यता है. उनकी यह जागरूकता और कृत्यों की प्रतिबद्धता एक प्रेरणा है, जो हम सभी को अपने कदम पर्यावरण की ओर बढ़ाने के लिए प्रोत्साहित करती है. इसलिए हमें चाहिए कि हम भी नवयुवकों के इस संदेश को समझें, उनका समर्थन करें और अपने छोटे-छोटे प्रयासों से इस धरती को सुरक्षित करें.

पर्यावरण संरक्षण अब केवल एक अभियान नहीं, बल्कि हमारी ज़िम्मेदारी और पहचान बन गई है. अगर हम सब मिलकर इस नई पीढ़ी के साथ कदम से कदम मिलाएं, तो स्वाभाविक रूप से पृथ्वी का भविष्य सुरक्षित और खुशहाल होगा.

भारत की श्रम संहिताएं

समावेशी एक परिवर्तनकारी कदम

चंद्रजीत बनर्जी

> यह सुधार इस विश्वास पर आधारित है कि काम सुरक्षित होगा और उचित भुगतान किया जाएगा; सामाजिक सुरक्षा श्रमिक के साथ बनी रहेगी और अनुपालन इतना सरल होगा कि सभी इसमें भाग ले सकेंगे. इस संरचना के निर्माण के लिए सरकार प्रशंसा की पात्र है. यदि हम इन्हें गति, पारदर्शिता और सहयोग के साथ कार्यान्वयन करते हैं, तो ये संहिताएँ भारत के अगले विकास अध्याय का आधार बन सकती हैं - व्यवसायों के लिए प्रतिस्पर्धा, श्रमिकों के लिए सम्मानजनक कार्य और निवेशकों के लिए पूर्वानुमानित व्यावसायिक वातावरण. यही विकसित भारत का सार है - समावेश के साथ विकास और समृद्धि, जो प्रत्येक श्रमिक तक पहुँचती हो.

भूमि और श्रम; भारत के विकास के आधार-स्तंभ हैं— भूमि अवसंरचना और औद्योगिक विकास को गति देती है, जबकि श्रम उत्पादकता और समावेश को बढ़ावा देता है. इस संदर्भ में, भारत की नई श्रम संहिताएं एक परिवर्तनकारी कदम को रेखांकित करती हैं, 29 कानूनों को एक आधुनिक, एकीकृत संरचना में समेकित करती हैं तथा श्रम परिदृश्य में स्पष्टता, एकरूपता और समानता सुनिश्चित करती है.

श्रमिकों के लिए, ये संहिताएं मज़बूत सामाजिक सुरक्षा, सुरक्षित कार्यस्थल और औपचारिक लाभों तक व्यापक पहुँच की सुविधा प्रदान करती हैं, जबकि व्यवसायों को सरलीकृत अनुपालन, कार्यबल प्रबंधन में लचीलेपन और सभी क्षेत्रों में समान अवसर का लाभ मिलता है. हालाँकि अंतिम प्रभाव कार्यान्वयन की गुणवत्ता पर निर्भर करेगा, लेकिन ये संहिताएँ भारत के श्रम बाजार को 21वीं सदी की अर्थव्यवस्था की आवश्यकताओं के अनुरूप बनाने की दिशा में एक निर्णायक कदम हैं.

जयपुर में वितरण सेवाओं से लेकर साणंद में तकनीकी भूमिकाओं और गुवाहाटी में निर्माण कार्य तक— विभिन्न क्षेत्रों में भारत के कार्यबल की आकांक्षा एक-जैसी है- सुरक्षित कार्य परिस्थितियों तक पहुँच, उचित पारिश्रमिक और दूसरी जगह ले जाने योग्य एवं विश्वसनीय सामाजिक सुरक्षा. श्रमिक चाहे कारखानों में कार्यरत हों या खेतों में, या प्लेटफ़ॉर्म-आधारित सेवाओं से जुड़े हों, वे तीन प्रमुख आश्वासन चाहते हैं- आय स्थिरता, पूर्वानुमानित सामाजिक सुरक्षा और रोज़गार में सम्मान. भारत की चार श्रम संहिताएँ इस आकांक्षा को जीवंत वास्तविकता में बदलने के उद्देश्य से तैयार की गई हैं, ताकि समता और सुरक्षा के सिद्धांत का कार्य जगत में अंतर्निहित होना सुनिश्चित हो सके. सुधारों के केंद्र में है - सामाजिक सुरक्षा कवरेज का विस्तार. लाखों असंगठित, गिग और प्लेटफ़ॉर्म श्रमिक, जो भारत के कार्यबल का एक महत्वपूर्ण हिस्सा हैं, नई व्यवस्था के तहत औपचारिक मान्यता प्राप्त करेंगे और कई सुविधाओं के पात्र बन जायेंगे.

भविष्य निधि, स्वास्थ्य बीमा और मातृत्व लाभ के प्रावधान अब औपचारिक क्षेत्र के कर्मचारियों तक ही सीमित नहीं रहेंगे, बल्कि ऐतिहासिक रूप से बहिष्कृत श्रेणियों तक इनका विस्तार हो जाएगा. यह बदलाव, न केवल कमजोर श्रमिकों के लिए सुरक्षा सुविधा को मजबूत करता है, बल्कि उद्यमों को रोज़गार को औपचारिक बनाने के लिए प्रोत्साहित करता है, जिसके परिणामस्वरूप सामाजिक सुरक्षा के समग्र आधार का विस्तार होता है. सामाजिक सुरक्षा संहिता, 2020 औपचारिक रूप से गिग, प्लेटफ़ॉर्म और असंगठित श्रमिकों को मान्यता देती है तथा केंद्र और राज्यों को उनके लिए समर्पित सामाजिक-सुरक्षा कोष स्थापित करने की सुविधा देती है. एग्रीगेटर्स को टर्नओवर का 1-2 प्रतिशत, भुगतान का अधिकतम 5 प्रतिशत, योगदान करने के लिए बाध्य किया जा सकता है, जो गिग और प्लेटफ़ॉर्म श्रमिकों के लाभों के वित्तपोषण का एक व्यावहारिक तरीका है. आधार-आधारित पंजीकरण पहले ही अधिसूचित किया जा चुका है और ई-श्रम पोर्टल में 31 करोड़ से अधिक श्रमिक नामांकित हैं. प्रत्येक श्रमिक को एक सार्वभौमिक खाता संख्या (यूनिवर्सल अकाउंट नंबर, यूएएन) दी गयी है, जिसके जरिये स्वास्थ्य बीमा, मातृत्व सहायता, या वृद्धावस्था पेंशन जैसे लाभों को नये कार्य-स्थल में स्थानांतरित किया जा सकता है, चाहे वे कहीं भी काम करते हों. ई-श्रम रजिस्ट्री, वास्तव में, अनौपचारिक श्रमिकों के संदर्भ में भारत का पहला राष्ट्रीय डेटाबेस है— जो समावेशी विकास और आपदा सहनीयता की दिशा में एक आवश्यक कदम है.

व्यवसाय सुरक्षा, स्वास्थ्य और कार्य परिस्थितियाँ संहिता भी उतनी ही परिवर्तनकारी है, जो सुरक्षा मानदंडों को एकीकृत करती है और विशेष रूप से, महिलाओं को सहमति और सुरक्षा उपायों के साथ रात्रि पाली में काम करने की अनुमति देती है. यह प्रगतिशील उपाय महिलाओं के लिए अवसरों का विस्तार करता है, जबकि सुरक्षा को अनिवार्य बनाए रखता है. ओएसएच संहिता लाइसेंस और निरीक्षण प्रणालियों को भी युक्तिसंगत बनाती है, जो दंड के बजाय रोकथाम की संस्कृति को बढ़ावा देने के क्रम में जोखिम-आधारित, प्रौद्योगिकी-सक्षम अनुपालन की ओर अग्रसर है.

लेखक महानिदेशक, भारतीय उद्योग परिसंघ (सीआईआई) हैं.

ग्वालियर चंबल डायरी

कद्दावर पूर्व मंत्री से अदावत महंगी पड़ी महाराज सिंह को

हरीश दुबे

कांग्रेस के दौर में जीडीए के उपाध्यक्ष से लेकर कुछ दिन पहले तक पार्टी के कार्यकारी जिलाध्यक्ष और संगठन प्रभारी रहे महाराज सिंह पटेल ने यह सपने में भी नहीं सोचा होगा कि दीवाली पर विधानसभा अध्यक्ष नरेंद्र सिंह से उनके बंगले पर जाकर मुलाकात करना उनके लिए महंगा पड़ जाएगा और कांग्रेस के प्रति पचास साल की वफादारी इस एक त्यौहारी मुलाकात से सवालों के घेरे में आएगी.

उपनगर ग्वालियर की राजनीति में बड़ा चेहरा रहे महाराज सिंह से एक ही झटके में पार्टी के सभी पद छीन लिए गए हैं, महाराज सिंह अब सिर्फ कांग्रेस के एक सक्रिय सदस्य मात्र रह गए हैं. लेकिन वे ग्वालियर में कांग्रेस के सभी कार्यालयों और अरबों की मिल्कियत के स्वामित्व और संचालन का जिम्मा संभालने वाले गांधी स्मारक न्यास के अभी भी सचिव हैं. पार्टी चाहकर भी उनसे यह पद नहीं छीन सकती, क्योंकि सचिव का चुनाव संस्था के न्यासी करते हैं.

बहरहाल, ओबीसी के प्रदेश स्तरीय अभियानों में अक्सर मंच पर नजर आने वाले महाराज सिंह को इस बात का सुकून है कि उन्हीं की पार्टी के तमाम नेताओं ने भले ही अपने अलग अलग निहितार्थ के चलते तिल का ताड़ बनाकर उनके खिलाफ प्रॉक्सी वार शुरू कर दिया है लेकिन बड़ी संख्या में ग्वालियर कांग्रेस के कार्यकर्ता उन्हें बेकसूर मानते हुए पार्टी के प्रति उनकी निष्ठाओं को असंदिग्ध मान रहे हैं.

इस पूरे प्रसंग को अर्जुन, श्यामा और वोरा से लेकर दिग्विजय तक की सरकारों में कद्दावर मंत्री रहे एक बड़े नेता से उनकी अदावत से जोड़कर देखा जा रहा है. यह अदावत पार्टी की अनुशासन समिति के अध्यक्ष के रूप में उनके द्वारा जारी एक नोटिस से शुरू हुई थी. राजनीतिक हलकों में माना जा रहा है कि महाराज सिंह पलटवार के शिकार हुए हैं.

युवक कांग्रेस को अध्यक्ष बनाने नहीं मिल रहे दावेदार

कांग्रेस को प्रदेश के सत्ता सिंहासन से उतरे अभी पांच बरस से कुछ ज्यादा ही समय हुआ है और वह प्रदेश में दूसरे नंबर की पार्टी होने के नाते सत्ता की प्रबल दावेदार बनी हुई है. इस आधार पर कहा जा सकता है कि पार्टी के अभी इतने बुरे दिन नहीं आए हैं कि संगठन में अध्यक्ष जैसे पदों को भरने के लिए दिन में दिया लेकर दावेदार ढूंढना पड़ें और नतीजे में एक भी दावेदार न मिले. लेकिन जमीनी हकीकत बयां कर रही है कि वाकई में पार्टी को इस सूरते हाल से गुजरना पड़ रहा है.

मौजूदा वक्त युवक कांग्रेस के संगठन चुनाव चल रहे हैं लेकिन शिवपुरी जिले के 24 ब्लॉकों एवं 14 उप ब्लॉकों में युवक कांग्रेस का अध्यक्ष बनाने के लिए पार्टी को कार्यकर्ता नहीं मिल रहे हैं. कुछ बरस पहले तक युवक कांग्रेस के इन अध्यक्ष पदों के लिए खूब मारामारी मचती थी, दिग्गज नेताओं की सोर्स सिफ़ारिश से ही अध्यक्ष पद मिलते थे लेकिन अब दावेदार गायब हैं. करैरा विधानसभा क्षेत्र की ही बात करें तो यहां के कुल सात ब्लॉकों में से सिर्फ नरवर में ही अध्यक्ष पद के लिए दावेदारी आई है, बाकी ब्लॉकों में पार्टी की दुकान खाली है. शिवपुरी जिले का सिंधिया का संसदीय क्षेत्र होना भी कांग्रेस में बने इस निराशाजनक हालात की एक वजह माना जा रहा है... !

भाजपा कार्यकारिणी में ग्वालियर का दबदबा लेकिन...!

कमल दल की प्रदेश कार्यकारिणी में ग्वालियर अंचल ने अपना दबदबा कायम रखा है. आशीष अग्रवाल और लोकेंद्र पाराशर अपने वर्क आउटपुट की दम पर क्रमश: प्रदेश मीडिया प्रभारी और प्रदेश मंत्री के ओहदे बचाने में कामयाब रहे वहीं इसी अंचल के तीन पुराने नेताओं शैलेन्द्र बरुआ, रणवीर रावत और सुरेन्द्र शर्मा को प्रदेश उपाध्यक्ष जैसी अहम जिम्मेदारी दी गई है. यह सच है कि इस अंचल में भाजपा का नेतृत्व कर रहे सिंधिया और नरेन्द्र सिंह के खाते में ज्यादा कुछ हासिल नहीं हुआ है क्योंकि नए बने पदाधिकारी या तो संघ की पसंद हैं या फिर सूबे के दीगर छत्रपों के संरक्षण का लाभ मिला है.

एलआईसी के अदाणी में निवेश पर सवाल

> *एलआईसी के लगभग 30 करोड़ बीमाधारक हैं. उन्हें विश्वास होना चाहिए कि उनके धन का इस्तेमाल सही तरीके से हो रहा है या नहीं? आर्थिक संकट में फंसे किसी उद्योगपति की सहायता के लिए तो इसका उपयोग नहीं हो रहा है? इस तरह का संदेह अर्थव्यवस्था के लिए घातक है.*

लग निजी बीमा कंपनियों की तुलना में एलआईसी पर अधिक विश्वास रखते हैं. 1956 में गठित लाइफ इंश्योरेंस कॉर्पोरेशन का उद्देश्य शहरों से लेकर गांव-गांव तक लोगों को जीवन बीमा की सुरक्षा प्रदान करने के अलावा सरकार के लिए पूंजी जुटाना भी था. पहले इस बात को लेकर आपत्ति जताई जाती थी कि जोखिम वाले शेयर मार्केट में एलआईसी का पैसा लगाना उसके मूल उद्देश्य के अनुरूप नहीं है. उदार आर्थिक नीति आने से पिछले 3 दशकों में दृष्टिकोण बदल गया. एलआईसी अभ्यासपूर्वक शेयर बाजार में निवेश करने लगी. पिछले 11 वर्षों में विशेषज्ञ समिति के परामर्श अनुसार विभिन्न भारतीय कंपनियों में एलआईसी ने निवेश किया जिसका बाजार मूल्य 10 गुना बढ़ गया. दूसरी ओर यह बात भी सामने आई कि अन्य कंपनियों की तुलना में अदाणी समूह में एलआईसी का निवेश कम है. यहां प्रश्न उठता है कि क्या एलआईसी ने किसी दबाव में अदाणी ग्रुप में 34,000 करोड़ रुपये धन निवेश किया? यहां उसकी स्वायत्तता पर प्रश्नचिन्ह लगता है. चूंकि एलआईसी भारत सरकार का उपक्रम है, इसलिए सरकार को इस संबंध में खुलासा करना उपयुक्त रहेगा. अमेरिकी अखबार वॉशिंगटन पोस्ट ने एलआईसी द्वारा अदानी उद्योग समूह में निवेश करने की बात उजागर किए जाने से देश में खलबली मचना स्वाभाविक है. यह तथ्य है कि केंद्र सरकार अदाणी उद्योग समूह पर मेहरबान है, तो क्या सरकार के दबाव में एलआईसी ने उसमें यह निवेश किया? करोड़ों देशवासी यह मानकर चलते हैं कि एलआईसी सरकार का उपक्रम होने से उनका निवेश सुरक्षित रहेगा. एलआईसी के लगभग 30 करोड़ बीमाधारक हैं. उन्हें विश्वास होना चाहिए कि उनके धन का इस्तेमाल सही तरीके से हो रहा है या नहीं? आर्थिक संकट में फंसे किसी उद्योगपति की सहायता के लिए तो इसका उपयोग नहीं हो रहा है? इस तरह का संदेह अर्थव्यवस्था के लिए घातक है. इस संबंध में मौन न रखते हुए सरकार को स्थिति स्पष्ट करनी चाहिए.

संपादकीय बोर्ड | प्रबंध संपादक : सुमीत माहेश्वरी, समूह संपादक : क्रांति चतुर्वेदी

निशानेबाज

गजब के हैं अमेरिकी पुलिसमैन चिप्स पैकेट में नजर आई गन

पड़ोसी ने हमसे कहा, %निशानेबाज, अमेरिका की पुलिस के बारे में आपकी क्या राय है? हमने तो सुना है और हॉलीवुड की फिल्मों में देखा भी है कि वहां के पुलिस वाले या कॉप बड़े स्मार्ट होते हैं और अपनी जगमगाती लाइट और सायरन वाली सफेद कार से पीछा कर बड़े-बड़े अपराधियों को पकड़ लेते हैं. वह संदिग्ध व्यक्ति पर रिवॉल्वर तान देते हैं और हैंड्सअप कहकर सरेंडर करने को कहते हैं. इसके तुरंत बाद कार के बोनेट पर उसका सिर दबाकर, हाथ पीछे कर हथकड़ी लगा देते हैं.

हमने कहा, अमेरिका की पुलिस कितनी शक्की और बेवकूफ है, इसकी मिसाल सामने आई है वहां बाल्टीमोर में एक 16 वर्षीय छात्र को पुलिस ने लपककर हथकड़ी पहना दी क्योंकि एआई या आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस सिस्टम ने गलती से पहचान कर ली थी कि वह छात्र गन लिए हुए है जबकि वास्तव में उसके हाथ में सिर्फ चिप्स का पैकेट था. उसने चिप्स खाने के बाद खाली पैकेट अपनी जेब में रख लिया था. पुलिस की 8 कारों का दस्ता वहां दनदनाता हुआ तुरंत पहुंच गया और पिस्तौलें दिखाकर उसे जमीन पर लेटने को कहा और हथकड़ी लगा दी. असल में स्कूल में लगे गन डिटेक्शन सिस्टम ने टैकी एलन नामक उस छात्र के हाथ में चिप्स के पैकेट को गलती से फायरआर्म या गन समझ लिया और अलर्ट जारी कर दिया.

पड़ोसी ने कहा, निशानेबाज, यदि एआई पर ज्यादा निर्भर रहेंगे और अपना दिमाग नहीं लगाएंगे तो ऐसा ही गड़बड़ घोटाला होता रहेगा. हमारी भारतीय पुलिस आज भी परंपरागत तरीके से चलती है. शक होने पर पकड़ो और थाने में लाकर पिटाई करो तो आरोपी गुनाह कबूल कर लेता है. अमेरिका की पुलिस का पैटर्न अलग है. वहां हर पुलिसकर्मी ऑफिसर कहलाता है और उनके ऊपर सीधा पुलिस चीफ होता है. वहां कांस्टेबल, हेड कांस्टेबल, एएसआई, पीएसआई जैसे रैंक नहीं होते. वहां का ऑफिसर ब्लैक ड्रेस, पी कैप पहनता है और आंखों पर काला चश्मा लगाता है. जहां किसी घर में रात को झगड़ा या शोरगुल हुआ तो 911 नंबर पर फोन करते ही कुछ मिनिटों में पुलिस की गाड़ियां आ धमकती हैं. यदि कोई अपराधी जंगल में घुस गया तो हेलिकाप्टरों से सर्चलाइट के जरिए उसको खोजा जाता है. वहां सारे देश में इंटरनेट पर फरार अपराधी का फोटो या स्केच पूरे डिटेल के साथ पहुंच जाता है और नाकाबंदी होने से उसका बच निकलना नामुमकिन होता है.% हमने कहा, %अमेरिका की पुलिस की ज्यादा तारीफ मत कीजिए, जो चिप्स के पैकेट को गन समझ ले, वह सोचिए कितनी बेअक्ल होगी !

शब्द-सागर : डॉ. सागर खादीवाला

CROSS WORD 12065 - डॉ. सागर खादीवाला

1	2	3		■	4	5	6
7			■	8			
	■	9	10			■	
11	12			■	13		
14		■	15	16		■	
■	17	18			■	19	■
20			■	21	22		23
	■	24				■	

बाएं से दाएं
1. भवन निर्माण कला 4. पागलों-सी ध्वनि या आचरण 7. किसी वस्तु का ऊपरी भाग या तल 8. प्रसिद्ध (उर्दू) 9. आवश्यकता (उर्दू) 11. सिंह 13. वाराह, सूअर (सं.) 14. स्थल, जगह 15. चित्र (उर्दू) 17. एक प्रसिद्ध मात्रिक छंद 20. धनी, अमीर (उर्दू) 21. पारा, एक रसौषध (सं.) 24. मुर्दे को कफन में लपेटना

ऊपर से नीचे
1. रहने या ठहराने की व्यवस्था (सं.)2. जिसकी स्तुति की गई हो (सं.) 3. किसी महल या किले के नीचे बसी हुई आबादी (उर्दू) 4. लड़ाई में वीरता दिखाने वाला योद्धा (सं.) 5. नया, नूतन 6. पक्षियों का चहचहाना, कुलबुलाना 8. किसी नगर दुर्ग या गढ़ का प्रवेश स्थल 10. चांदी 12. पति की बहन का पति 16. मानना, स्वीकार करना 18. हंसाने वाला 19. घोड़ा 20. सूर्य 22. फौज, पल्टन 23. लहू, खून

Solution 12064

पं	चा	क्ष	र	■	सु	गु	ना
चो	र	■	न	व	कु	मा	री
प	■	मा	वा	■	गा	ना	■
चा	प	लू	स	■	र	■	अ
र	ह	म	■	उ	ता	र	ना
■	चा	■	मे	दा	■	■	व
भ	न	क	■	र	फू	ग	र
ला	ना	■	पा	ता	ल	■	ण

ज्योतिषाचार्य प्रियंका नारायणशंकर व्यास, कोतवाली बाजार, जबलपुर (म.प्र.)

आज जिनका जन्मदिन है

वर्ष के प्रारंभ में स्त्री पक्ष से नवीन समाचार की प्राप्ति होगी, सुख प्राप्त होगा, नवीन मित्र से भेंट होगी, व्यापार के क्षेत्र में यात्रा की रूपरेखा बनेगी, वर्ष के प्रारंभ में शासन सत्ता का लाभ प्राप्त होगा, शिक्षा में रूचि रहेगी, मित्रों एवं भाईयों के सहयोग से राजनैतिक लाभ प्राप्त होगा, वर्ष के अन्त में भूमि भवन संबंधी विवाद का सामना करना पडेगा, व्यर्थ के विवाद एवं मतभेद बढेंगे.

मेष और वृश्चिक राशि के व्यक्तियों को शासन सत्ता का सुख प्राप्त होगा, शिक्षा में रूचि रहेगी, वृष और तुला राशि के व्यक्तियों को व्यर्थ वाद विवाद हो सकता हे, शिक्षा में व्यवधान के कारण मानसिक परेशानी होगी, सिंह राशि के व्यक्तियों को मित्र एवं भाईयों के सहयोग से राजनैतिक लाभ प्राप्त होगा, व्यापार के क्षेत्र में लाभ का योग है,मकर और कुंभ राशि के व्यक्तियों को मित्र से भेंट होगी, धनु और मीन राशि के व्यक्तियों को भूमि भवन संबंधी विवाद का सामना करना होगा.

आज जन्मे शिशु का भविष्य

आज जन्म लिया बालक बुद्धिमान और मिलनसार होगा, स्वाभाव में क्रोध का भाव रहेगा, निर्णय लेने में सक्षम रहते हैं, ये किसी के अधिनस्थ काम करना पसंद नहीं करते, इनका भाग्योदय जन्म स्थान से दूर होता है.

मेष- मित्रों से कहासुनी हो सकती है, सहकर्मी नुकसान पहुंचाने का प्रयास कर सकते हैं, श्रम प्रयास से अभीष्ट की प्राप्ति होगी, नौकर चाकरों का सहयोग मिलेगा.

वृषभ- पारिवारिक योजना में परिवर्तन होगा, आकस्मिक धनलाभ होगा, नवीन वस्त्राभूषण की प्राप्ति होगी, निजी कार्यो में खर्च होगा.

मिथुन- प्रतियोगी परीक्षा में बेहतर प्रदर्शन की संभावना, जीवनसाथी की भावनाओं का ध्यान रखें, भाग्यवर्धक समाचार मिलेगा, आत्म विश्वास मनोबल बना रहेगा.

कर्क- लेनदेन को लेकर आप पर आरोप-प्रत्यारोप लग सकते हैं, वाहन चलाने में सावधानी रखें, प्रियजनों से विवाद को टालें, व्यर्थ व्यय होगा.

सिंह- व्यापार में नये लोग साथ आ सकते हैं, कार्यक्षेत्र में बदलाव लाभकारी रहेगा, पारिवारिक सुख मिलेगा, पुराना कार्य बनेगा, संतोष मिलेगा.

कन्या- लेनदेन का मामला सुलझने का आसार है, भौतिक सुख सुविधा पर खर्च होगा,जोखिम के कार्यो में रूचि रहेगी, मनोकांक्षा की पूर्ति होगी.

तुला- अनुभव की कमी से लाभ की योजना हाथ से निकल सकती है, अपने खर्च पर कटौती कर परिवार पर खर्च करेंगे, किये गये प्रयासों में लाभ होगा.

वृश्चिक- साझेदारी में कार्य शुरू कर सकते हैं, आपसी बातचीत से मामले सुलझेंगे, भौतिक सुख साधनों की पूर्ति होगी, संपत्ति विवाद का समाधान होगा.

धनु- युवाओं को कैरियर में बेहतर सफलता मिलेगी, जल्दबाजी में गलती हो सकती है, धार्मिक यात्रा का योग है, अनावश्यक परिश्रम होगा.

मकर- अच्छे अवसर सामने आयेंगे, अनुशासन की कमी से कार्यस्थल की व्यवस्था बिगड़ सकती है, पारिवारिक वातावरण सुखद रहेगा.

कुम्भ- पुराना विवाद हल होगा, तीखी बातों से करीबी नाराज हो सकते हैं, यात्रा सुखद रहेगी, मानसिक प्रसन्नता रहेगी, लाभ होगा, पर कम.

मीन- समय पर मदद न मिलने से निराशा होगी, भावुकता में लिये फैसले बदलने पड़ सकते हैं, समय के अनुरूप कार्य करे, पुराना कार्य बनेगा.

उदयकालीन ग्रह चाल

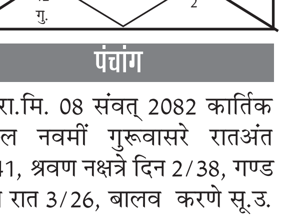

पंचांग

रा.मि. 08 संवत् 2082 कार्तिक शुक्ल नवमीं गुरूवासरे रातअंत 4/41, श्रवण नक्षत्रे दिन 2/38, गण्ड योगे रात 3/26, बालव करणे सू.उ. 6/26, सू.अ. 5/34, चन्द्रचार मकर रात 2/46 से कुम्भ, पर्व- अक्षय नवमीं, शु.रा. 10, 12, 1, 4, 5, 8 अ.रा. 11, 2, 3, 6, 7, 9 शुभांक- 3, 5, 9.

व्यापार भविष्य

कार्तिक शुक्ल नवमीं को श्रवण नक्षत्र के प्रभाव से सोना, चांदी, कपास, मोती, पुखराज, अलसी, उड़द, घी, तिल, गुड़, खांड़, रूई, कपास, में तेजी होगी, वायदा विचार आज 1 बजकर 18 मिनिट से 25 मिनिट के रूख पर व्यापार कर लाभ उठायें, भाग्यांक 3725 है.

SUDOKU 7197

9		6		3		4		8
	2				9		7	
4			1	6				2
		8			2		3	
1		4				2		5
	3		5			8		
7				9	5			3
	8		6				4	
6		2		7		5		1

■ प्रत्येक पंक्ति में 1 से 9 तक के अंक भरे जाने आवश्यक है. इनका क्रमवार होना आवश्यक नहीं है. आड़ी और खड़ी पंक्ति में एवं 333 के वर्ग में किसी भी अंक की पुनरावृत्ति न हो इसका विशेष ध्यान रखें. ■ पहले से मौजूद अंकों को आप हटा नहीं सकते. ■ पहेली का केवल एक ही हल है.

नवभारत सू-डोकू 7196

3	6	5	1	8	2	7	4	9
7	9	2	3	5	4	1	8	6
4	1	8	6	7	9	5	3	2
6	5	9	2	4	8	3	7	1
8	4	7	9	3	1	6	2	5
1	2	3	5	6	7	4	9	8
2	7	6	4	9	5	8	1	3
5	8	1	7	2	3	9	6	4
9	3	4	8	1	6	2	5	7